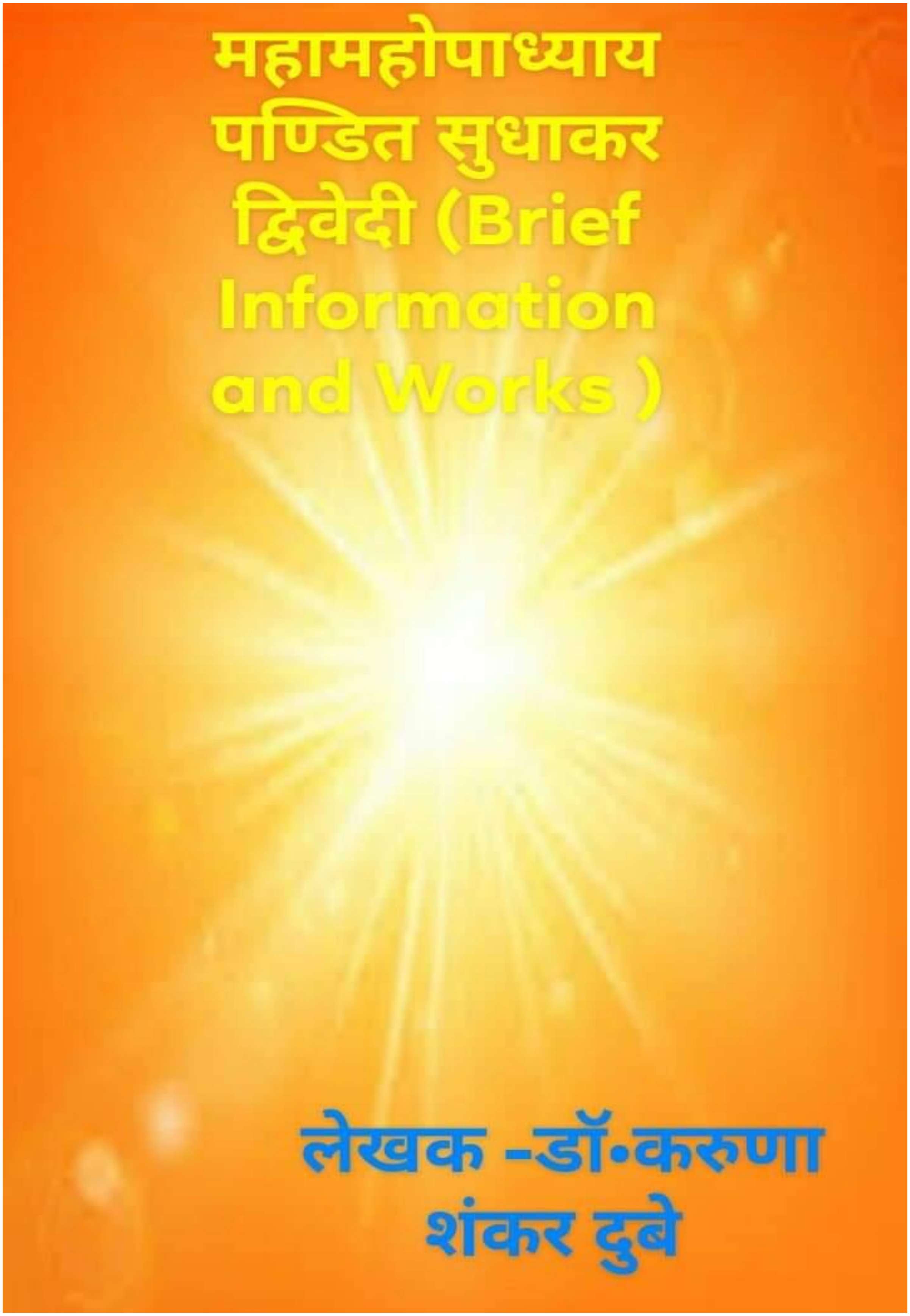
महामहोपाध्याय
पण्डित सुधाकर
द्विवेदी (Brief
Information
and Works)
लेखक -डॉ•करुणा
शंकर दुबे

अभिमत

जगद्गुरु भारत की भूमि का वैश्विक महत्व है। अध्यात्म एवं ब्रहमाण्ड की विलक्षण परम्पराओं से सराबोर साहित्यिक ,सांस्कृतिक जीवन को नये आयाम देना ही भारतीयता है, इसके वास्तविक स्वरूप को समझते ही प्राणी स्वयं को प्रकृति से जुड़ा अनुभव करने लगता है। यहाँ के रीति–रिवाज की श्रृंखला असीमित है, प्रत्येक साहित्य की अपनी भाषा भी होती है और उसका अपना जन–जुड़ाव भी होता है। इसके पीछे कोई न कोई रहस्य अवश्य छिपा हुआ होता है। अपने धर्म, आस्था, पूजा और अर्चना को मूर्तरूप देने के लिए प्रतीक मन्त्र और गाथा है जो सम्पूर्ण भारतीयता को अतीतकाल से वर्तमान तक को समृद्ध बनाये हुए हैं। चाहे कर्मकाण्ड के बहाने से जोड़ते रहे हो या दुःख से मुक्ति पाने के लिए ज्योतिष , खगोल में समाधान उपलब्ध होते रहे हैं। यह विवेचन प्रतीक रुप नहीं है , मनुष्यता को जीवंत रखने का सहज माध्यम है किसी भी शुभ अवसर पर या किसी भी मंगल कार्य पर परिवार के लोग इन साहित्यों के मर्म का स्मरण अवश्य कर लेते हैं, मानो अपनी समृद्ध परम्परा को सजीव और साकार कर रहे हों।

यद्यपि समय के साथ साहित्य और साहित्य के विषय को अब उतने विस्तार जानने की प्रवृत्ति घटती अथवा प्रदूषित होती जा रही है फिर भी हमें अपनी मूल संस्कृति से जुड़े रहना है। यही भारतीय होने का गर्व है क्योंकि इसके द्वारा हम अपने अस्तित्व को बनाये रख सकते हैं। साहित्य का अध्ययन न केवल ज्ञान वृद्धि के लिए संतुलित आहार है अपितु समृद्ध अतीत, वर्तमान और भविष्य को सार्थक करने का सर्वोतम साधन भी है। यद्यपि महामहोपाध्याय पं0 सुधाकर द्विवेदी जी ने स्वयं के विषय में कुछ भी नहीं लिखा और उनके सुपुत्र श्री पद्माकर जी ,जो कि उसी गवर्नमेंट कॉलेज में थे और पं0 सुधाकर जी की किताबें प्रकाशित भी कराई,किन्तु कुछ खास विवरण वर्तमान लेखको की तरह नहीं दिया,यहां तक की आदरणीय श्री कमलाकर द्विवेदी जी भी अनावश्यक प्रचार के पक्षधर नहीं रहे,जबकि आज बाजारीकरण के दौर में इसकी आवश्यकता है।

अतीतकाल में प्रकृति–देव आराधना के लिए भरपूर समय था उसके लिए सब कुछ मनुष्य कर लेता था। वर्तमान भागती–दौड़ती ज़िन्दगी में अधिक व्यस्तता और आधुनिकता ने समाज को बोझिल कर दिया हैं। सामाजिक सौहार्द रुठ गया है हम अपना मूल स्वरुप खोते जा रहे हैं। हमारी प्रचलित रीतियां लुप्त होती जा रही हैं या नष्ट–प्राय हैं। हमें उनका

व्यवहारिक रुप बनाये रखना है ऐसे समय में रचनाकार के सन्दर्भ में पुस्तक की रचना का उद्देश्य लोगों के बीच अपनी खोयी हुई ऐतिहासिकता को जगाने और जानने का सहज कार्य कराने में सक्षम होगा। शहरी जीवन के लोग अपनी संस्कृति को जान सकेंगे कि हमारा अतीत कहाँ था और हम कहाँ हैं।

इस पुस्तक को सहेजने का श्रेय परम् आदरणीय अग्रज एवं आदरणीय सुधाकर जी के परिवारी सदस्य काशी पत्रकार संघ के श्री शुभाकर दुबे जी को है ,साथ ही आदरणीया भाभी जी श्रीमती सावित्री दुबे को है,जिन्होंने मुझ परिवार के छोटे भाई को इस योग्य समझा और उपलब्ध फोटो और हस्तलिपि में अल्फ्रेड़,लार्ड़ टेनिसन(Alfred Tennsyon), जो ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैण्ड़ के राजकवि थे,उनकी पुस्तक 'एनक आर्ड़ेन'(Enoch Arden),का हिन्दी अनुवाद किया पत्र दिया,अभी भी उनके पास कुछ पुस्तके हैं जो सुरक्षित हैं, मैं हृदय से उनका आभारी हूँ। साथ ही मै आभारी हूँ धर्मपत्नी विदुषी श्रीमती गीता दुबे का जिन्होंने सदैव उत्साहित किया।

अन्त में श्री जितेन्द्र जी के साथ अपनी वरिष्ठ पुत्री कनिष्ठा और कनिष्ठ चयनिका के स्नेह का भी ऋणी हूँ जिनके सुअवसर से यह कार्य अपनी पूर्णता का प्राप्त हो सका । मुझे पूर्ण विश्वास है कि विद्वत्जन इसका अवश्य स्वागत करेंगे। इस प्रयास में छपाई सम्बन्धी त्रुटियां सम्भव हो सकती हैं उसके लिए क्षमा करने का कष्ट करेंगे।

डॉ0 (करुणा शंकर दुबे)
एम0ए0–संस्कृत, पीएचडी(काशी हि0वि0वि0)
आचार्य पालि(सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि0वि0)
वाराणसी

गीता जयन्ती

पता–एस8/223ए–1
, खजुरी–
सुधाकर रोड़,
वाराणसी–221002

महामहोपाध्याय पण्ड़ित सुधाकर द्विवेदी

महामहोपाध्याय पण्ड़ित सुधाकर द्विवेदी, भारतीय नागरी, हिन्दी भाषा के शिखर पुरुष है , जिनसे , हिन्दी भाषा की गति का प्रवाह संस्कारित होता है । उन्होंने हिन्दी लेखनी की धुंधली रेखा में नवतूलिका से ,जीवन रंग प्रदान करने का सत्प्रयास किया, जिस समय हिन्दी का आन्दोलन प्रगति पर था और हिन्दी गद्य की लड़ाई के साथ हिन्दी पद्य भी राष्ट्रीय आन्दोलन में बराबर आगे बढ़–चढ़कर अपना योगदान कर रहें थे ,उस समय समाज में कोई अन्यथा भाव न हो जाय ।

साहित्यिक दृष्टि से भाषा को राष्ट्रधर्म प्रधान मानकर रचनाधर्मिता की जा रही थी,उसी समय काशी में एक से एक सुनाम धन्य विद्वत् जनों का जन्म भी हो रहा था।

उन्हीं में सन् 1855 को पं0 सुधाकर द्विवेदी जी का जन्म वरुणा नदी के किनारे वर्तमान पृथेश्वरमहादेव मदिर के समीप ,खजुरी ग्राम में 26 मार्च को पिता कृपालदत्त द्विवेदी और माता लाची की सन्तान के रुप हुआ था ,(सुधाकर जी ने एक दोहे में इस बात से स्पष्ट किया है कि उनके पिता का नाम कृपाल दत्त है –यसुदातन को झंखत हैं , यशुदा तन को नाहिं। नर कपरन को झंखत हैं

, नरक परन को नाहि।{ मेरे पिता पं0 कृपाल दत्त}अर्थात् लोग दाताओं (दातन)के यश को झंखते है पर कृष्ण (यशुदा तन)के लिए नहीं झंखते है और लोग(नर)कपड़ों के लिए झंखते है,पर नरक पड़ने के निए नहीं झंखते हैं। प्रथम हिन्दी –साहित्य –सम्मेलन काशी 1910,इडियन प्रेस ,प्रयाग में मुद्रित। शीर्षक–हिंदी साहित्य {महामहोपाध्याय पं.सुधाकर द्विवेदी लिखित}पृष्ठ45–46)

ब्रजरतनदास जी ने अपनी पुस्तक हरिश्चन्द्र में लिखा है कि सन् 1850 ई0 में तारामोहन मित्र ने 'सुधाकर'पत्र निकाला ,जो कुछ दिन चलकर बंद हो गया । इसी पत्र के नाम पर सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विद पं0 सुधाकर जी के पिता ने इनका नामकरण किया था। (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ,श्रीयुत् ब्रजरत्नदास हिन्दंस्तानी एकेड़मी यू0पी0इलाहाबाद,1935,संस्करण पृष्ठ.201) बाल्यावस्था में सुधाकर जी की शिक्षा दीक्षा संस्कृत कालेज के सुयोग्य गुरु पं0 दुर्गादत्त जी से गणित उसके बाद ज्योतिष श्री देवकृष्ण जी की देखरेख में क्रमशः व्याकरण और लीलावती का अध्ययन कराया गया ,आचार्य देवकृष्ण जी त्रिस्कंध (गणित,जातक,और संहिता अर्थात् ग्रहचार) ज्योतिर्वेत्ता थे, जिनसे सुधाकर जी ने शिक्षा अर्जित की,साथ ही श्री बापूदेव शास्त्री जी से द्विवेदी जी गणित और ज्योतिष को पढ़कर शास्त्रीय विधि से पारंगत हो गये, इस प्रकार निरंतर अध्ययन अध्यापन से द्विवेदी ने अपनी गरिमा के अनुसार विद्वत् समाज में श्रेष्ठता प्राप्त की , उसका कारण गुरु बापूदेव शास्त्री जी का सानिध्य रहा और स्वयं की बुद्धिमत्ता भी रही। जीवनचर्या के आरम्भिक दिनों में सुधाकर जी दरभंगा संस्कृत पाठशाला से भी जुड़े रहे।

अंग्रेजी सरकार ने बनारस में शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा कार्य किया, विशेष रुप से कम्पनी सरकार ने बनारस के रीजेन्ट जोनेथन डंकन्स के सामने प्रस्ताव रखा , जिस पर गर्वनर जनरल कार्नवालिस ने गवर्मेण्ट संस्कृत स्कूल के स्थापना की स्वीकृति प्रदान की,काशी नरेश महाराजा महीप नारायण सिंह जी ने उस कार्य के लिए जमीन दान में दी। डंकन साहब स्वयं इस व्यवस्था को देखने लगे,लेकिन कुछ समय बाद उन्हें बम्बई जाना पड़ा,1835 में गवर्मेण्ट संस्कृत कालेज के भवन निर्माण हुआ,प्रथम विश्व युद्ध के समय कम्पनी शासन समाप्त हो गया।

ब्रिटेन की महारानी भारत की महारानी बन गयी। गवर्मेण्ट कालेज क्वींस कालेज के नाम से हो गया,उस समय आर0टी0एच0ग्रिफिथ प्रिंसिपल बने ,वे संस्कृतज्ञ थे, उनके बाद डा0जी0 थिबो आये, वे जर्मन थे, महामहोपाध्याय द्विवेदी जी के अनन्य मित्र बने,उसका कारण द्विवेदी जी की निजी भाषा में सरलता ,सहजता और बोधगम्यता का होना था ।

इसके बाद यहॉ प्रिंसिपल डा0 आर्थर वेनिस ने ''सरस्वती भवन''बनाया, भाषा के विषय में सुधाकर जी का मानना था कि यह अधिकार जनता और साहित्यकार को है , इसलिए वे भाषा को जनमानस से जोड़ना चाहते थे । विद्वानों को आकृष्ट करने वाली सुधाकर जी की असाधारण प्रतिभा भी उन्हीं दिनों शास्त्रीय विवादों के गहन शास्त्रार्थों से यत्र तत्र सुनाई दे रही थी,एक ओर अध्यापक के रुप में और दूसरी ओर छात्र के रुप में। उनका शास्त्रीय तर्क उत्तरोत्तर वृद्धिगत था। श्री सुधाकर जी ने ,ज्योतिष शास्त्र में संस्कृत भाषा के माध्यम के साथ ही साथ , हिन्दी भाषा में सराहनीय एवं पाण्ड़ित्यपूर्ण योग्यता प्राप्त की, साथ ही आंग्लभाषा पर भी डा0 थिबो के सानिध्य से अपने पर पर्याप्त अधिकार प्राप्त कर लिया था। जार्ज फ्रेड़रिक विलियम थिबो (GeorgeFrederickWilliamThibaut)वस्तुतः जर्मनी में पैदा हुए थे,किन्तु उनका कार्य क्षेत्र इग्लैण्ड़ रहा , वर्ष1875 से 1888 के समय वाराणसी में रहते हुए सुधाकर जी के साथ 1875 से 1878 के बीच पंचसिद्धान्तिका का सहसम्पादन किया ,जिस पर बाद में संस्कृत टीका सुधाकर जी ने ही लिखी। बाइस वर्ष की अवस्था में गृहनगर खजुरी में देश–विदेश से पढ़ने वालों की भीड़ सुधाकर जी के पास आने लगी थी।

सुधाकर जी ने गुरु बापूदेव शास्त्री जी के साथ अक्षांश जानने की विधि पर 'डलहोस साहब' की विधि को भी शास्त्रार्थ में मिली चुनौती में काशी का गौरव स्थापित कर एक नयी मान्यता स्थापित की। इसी बीच सन् 1883 ई0 में राजकीय संस्कृत कालेज बनारस की एशिया की हस्तलिखित पुस्तकों की सबसे बड़ी पुस्तकालय ''सरस्वती भवन'' के पं0 सुधाकर जी पुस्तकालयाध्यक्ष बनाये गये। यहॉ पर भी द्विवेदी जी अपने पठन–मनन में संलग्न रहे,और संस्कृत के पुस्तकों को हिन्दी में सभी के लिए तैयार करते रहे। सुधाकर जी यथासमय अल्फ्रेड़,लार्ड़ टेनिसन(Alfred Tennsyon), जो ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैण्ड़ के राजकवि थे,उनकी पुस्तक 'एनक आर्ड़ेन'(Enoch Arden),का हिन्दी अनुवाद किया करते थे।

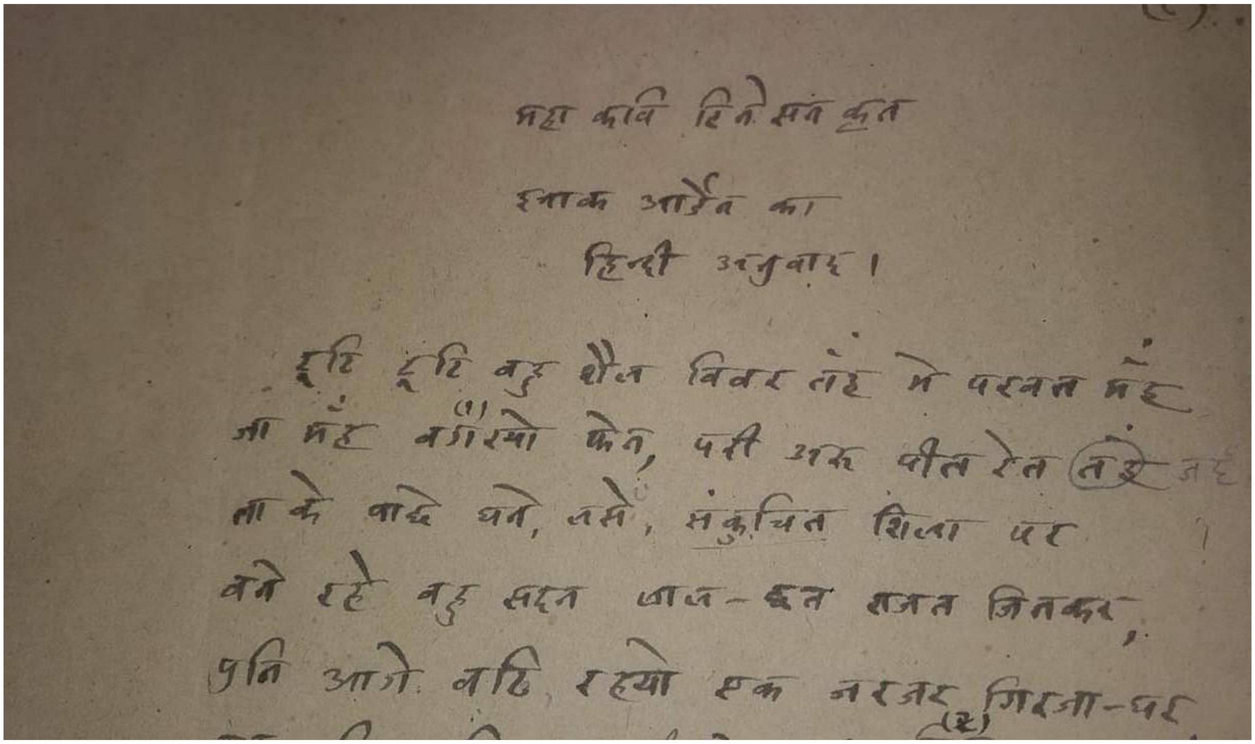

महा कवि टिनेसन कृत

इनाक आर्डेन का

हिन्दी अनुवाद।

टूटि टूटि बहु शैल विवर तहँ मे परवत महँ
जा महँ बगरयो[1] फेन, परी अरु पीत रेत तहँ जहँ
ता के पाछे घने, लसे, संकुचित शिला पर
बने रहे बहु सदन लाल-छत राजत जितकर,
पुनि आगे नहिं रहयो एक जरजर[2] गिरजा-घर

महा कवि टेनिसन कृत

इनाक आर्डेन का

हिन्दी अनुवाद।

टूटि टूटि बहु शैल शिखर तहँ मे परयत गहर
ता महँ झाँस्यो (1) फेन, परी अरु पीत रेत तहँ
ता के आगे परे, लसे, संकुचित घिला पर
बने रहे बहु सदन लाल-छत सघन जितकर,
पुनि आगे नहि रह्यो एक सरकट गिरजा-पथ,
तब चढ़ि जाती गर गई जो ऊँचे ~~मक्की~~ मिल (2) पर,
फिरि आकाश लौं ऊँच समाधी (3)-डेन जाति कर,
जहाँ उगी आश्रुक पास बहु तासु ढेर पर,
पुनि अतीष (4) नव जहाँ शरद आक्रमणा करन कर,
रहे पियाला सदृश जोह मँह राजत तँह पर।

भयो वर्ष शत-एक तहाँ खेलहिँ सँग तट पर,
बाल तीन त्रय सदन, तीन घर के अति सुन्दर,
अनी लालि का छोट रूप मँह सर्वोत्तम धन,
~~फिलिप अकेला पूत अहै [illegible] चक्की पर~~
फिलिप अकेला पूत वही ता का तँह मिलवाल,
तीसर बाल इनाक अनाथ मछुवा को बालक,
इन्हो पितु हिमराशी नाश्यो नाव संचालक,
है तीनों सँग तहाँ नाच नित खेलैं तट पर
जहँ बगरियो है काठ, डोर, कहुँ जाल मछलिकर,
कहुँ मुर्चा-युत लंगर, नाव खिंची कहुँ थलपर,
रचैं (5) घरौंदा तहाँ गलित बालू कै मिलकर,
प्रति दिन सो बहि जाय लहर जब मार हिलोरा
नित तिन कर पद-चिह्न धोय करै नित कर कोरा

(1) फैला हुआ (2) आटा की चक्की (3) कब्र
(4) एक प्रकार का पेड़ जिस में फल बरसात में होते हैं

खगोलशास्त्र में उनके कार्य की महानता को ध्यान में रख कर महारानी विक्टोरिया ने अपने जुबिली महोत्सव के अवसर पर 16 फरवरी 1887 को ''महामहोपाध्याय'' की उपाधि से सुधाकर जी को विभूषित किया । क्रमशः उन्नति के शिखर पर कदम रखते हुए प्रिंसिपल डॉ0 आर्थर वेनिस के विरोध के बाद भी सुधाकर जी को सन् 1889 में बनारस क्वींस कालेज में गणित के प्राध्यापक का पद मिला,क्योंकि वे बापूदेव शास्त्री से अलग हिन्दी भाषा के पोषक थे, कहा जाता है कि गणित अध्ययन के लिए पाटी परम्परा थी ,जिसमें एक पटरी पर धूल या अबीर फैलाकर उसपर हिसाब करने की प्रथा बापूदेव शास्त्री जी ने समाप्त की,और स्लेट पर अध्ययन व्यवस्था आरम्भ की। (प्राचीन भारतीय गणित–पृष्ठ 115,विज्ञान भारती नईदिल्ली)कुछ ही दिनों बाद ए0ए0 की कक्षाओं को मैथेमेटिक्स और इन्डियन ऐस्ट्रानामी की कक्षाओं को पढ़ाने का काम भी सुधाकर जी करने लगे, लेकिन सुधाकर जी के पहनावे से छात्रों को उनके प्रति पहले दिन कुछ अश्रद्धा हुई,किन्तु उनके पढ़ाने की कला से छात्र आश्चर्यचकित हो गये,उसके बाद छात्र बड़ी सावधानी से दत्तचित्त होकर श्रद्धापूर्वक उनसे गणित पढ़ते थे। उनके संस्कृतज्ञ पहनावे बगलबन्दी ,धोती और पगड़ी के वेश में गणित की स्नातकोत्तर कक्षाओं में बड़े स्तर के परिष्कारों के साथ पाठ पढ़ाने वाला यही एक भारतीय था,जो ग्रहगोल गणित का विद्वान् ,ज्योतिषी और काशी का एक सुयोग्य प्रसिद्ध पण्ड़ित था। इनसे गणित पढ़कर छात्रों का परिश्रम करने में मन भी लगता था,संभवतः उस समय सभी परीक्षाएं कलकत्ता यूनिवर्सिटी से होती थी,जबकि वैदुष्य , गाम्भीर्य एवं उच्च स्तर के व्याख्यानों से प्रभावित होकर बड़े–बड़े अंग्रेज भी द्विवेदी जी की गुण गरिमा पर भक्ति प्रदर्शित करने लगे थे, यद्यपि यह आश्चर्य सा मालूम पड़ता हैं क्योंकि सुधाकर जी तो एम0ए0 नहीं थे, बाद में फेलो ऑफ इलाहाबाद यूनिवर्सिटी(एफ0ए0यू0) भी हुए। यह सब उनकी उत्कृष्ट योग्यता का परिचायक है। (केदारदत्त जोशी कृत् ग्रहलाघवम्–पृष्ठ–35)

आज भारत की भाषा हिन्दी हो गई है। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के साथ–साथ महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी जी ने अपने समय में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की उच्च शब्दों में उद्घोषणा कर दी थी ,तदनुसार द्विवेदी जी ने अपनी लेखनी को हृदय से हिन्दी की दिशा में भी बदलावकर कुछ ग्रन्थों को अपने विचारों के साथ मुद्रित किया ,जिसमें 1.भाषा बोधक प्रथम, 2. भाषा बोधक द्वितीय,

3.हिन्दी भाषा का व्याकरण (पूर्वाद्ध) 4.तुलसी सुधाकर तुलसी सतसई पर कुण्ड़लियाँ 5.महाराज ''माणाधीश''श्री रुद्रसिंह कृत् रामायण का सम्पादन 6.जायसी की पद्मावत ग्रियर्सन का सहयोग 7.माधव पंचक 8. राधाकृष्ण रामलीला 9.तुलसीदास जी की विनयपत्रिका संस्कृत में अनुवाद 10.श्री ''भारतेन्दु ''हरिश्चन्द्र की जन्मपत्री आदि हैं। यही नहीं स्वरचित चलराशिकलन की रचना करते हुए सुधाकर जी ने यह दोहा लिखा था ,जो पृष्ठ–04 पर है,और उसमें उनके हिन्दी भाषा में गणित के प्रति भारतीयों के लिए अपनी भावना अपने तरीके से अर्थपूर्ण कही गयी है–

गणित पयोनिधि सविधि मथि काढ़ी सुहीर।

भणित सुधाकर नहीं मुधा वसुधा मधि हे धीर ।। 1।।

कल(1)न परत निज कलन (2)सों कलन(3)बिना जौं तात।

कल (4)न कहहु कल(5)कलन(6)हित कलन देहु येहि प्रात।।2।।

(1) कल अर्थात् विश्राम,आराम,चैन (2) कलन अर्थात् करन,कर हाथ का बहुवचन (3)कलन अर्थात् कलना,गणना,हिसाब करना (4)कल अर्थात् दूसरा आने वाला दिन(5) कल अर्थात् सुन्दर,बढ़िया (6) चलराशिकलन।

यह सब हिन्दी के प्रति सम्मान ही तो है। Santa Bani Sangraha I - Belvedere Printing Press Allahabad द्वारा प्रकाशित सन्त बानी संग्रह के प्रकाशन की बात पर सुधाकर जी ने हिन्दी में प्रकाशित किये जाने पर 'न भूतो न भविष्यति' की बात कही थी ,जिसे पुस्तक के प्रकाशक ने सम्पादकीय आशीर्वाद रुप में लिखा।

केदारदत्त जोशी ने जो सूची दी है उसमें सर्व प्रथम श्री सुधाकर जी के रचित व शोधित ग्रन्थों की सूची का पाठको के समक्ष उपस्थित करना उचित होगा।

(1)वास्तव विचित्र प्रश्नानि
(2)वास्तव चन्द्र श्रृगोंन्नति :।
(3)दीर्घवृत्तलक्षणम्।
(4)भ्रामम् रेखा निरुपणम्।

(5)ग्रहणे छादक निर्णयः।

(6)यन्त्रराजः।

(7)प्रतिभाबोधकः।

(8)धरा भ्रमे प्राचीन नवीनयोर्विचारः।

(9)पिण्ड़ प्रभाकरः।

(10)सशल्यबाणनिर्णयः।

(11)वृत्तान्तर्गत सप्तदशभुज रचना।

(12)गणक तरंगिणी।

(13)दिङ्मीमांसा ।

(14)द्युचरचारः।

(15)फ्रेंचभाषा से संस्कृत में बनाई हुई चन्द्रसारिणी तथा भौमादि ग्रहों की सारिणी सात खण्ड़ों में ।

(16)1,100000 लघुरिक्थ की समयसारिणी तथा एक एक कला की ज्यादि सारिणी ।

(17)समीकरण मीमांसा{ Theory of Equetion}दो भागों में ।

(18)गणित कौमुदी।

प्राचीन आचायों के सुधाकर द्विवेदी कृत् भाष्य,टीका,उपपत्ति और अनेकमतों की मीमांसा के साथ परिष्कृत तथा तथ्यमत प्रदर्शन पूर्वक मुद्रित ग्रन्थ {गणित ज्योतिष}

(19)वराह मिहिर कुत पंचसिद्धान्तिका।

(20)कमलाकर भट्टविरचितः सिद्धान्ततत्व विवकः।

(21)लल्लाचार्यकृत शिष्यधीवृद्धिदततन्त्रम्।

(22)करणकुतूहलःवासनाविभूषण सहितः।

(23)भास्करीय लालावतीटिप्पणी सहिता।

(24) भास्करीय बीजगणितं टिप्पणी सहितम्।

(25)बृहत्संहिता भट्टोत्पल टीका संहिता।

(26)ब्राह्मस्फुटसिद्धान्तः स्वकृततिलक {भाष्य}सहितः।

(27)ग्रहलाघवः,स्वकृतटीका सहितः।

(28)याजुष ज्योतिषं सोमाकर भाष्य सहितम्।

(29)श्रीधराचार्यकृत स्वकृतटीका सहिता च त्रिशतिका।

(30)करणप्रकाशःसुधाकरकृत –उपपत्ति सहितः।

(31)सूर्यसिद्धान्त सुधाकरकृत सुधावर्षिणीसहितः।

(32)सूर्यसिद्धान्तस्य एका बृहत्सारिणीतिथिनक्षत्रयोगकराणानां घटोज्ञापिका।

हिन्दी भाषा में मुद्रित (गणित ज्योतिष)ग्रन्थ

(33)चलन कलन।

(34)चलराशिकलन।

(35)ग्रहण।

(36)गणित का इतिहास।

(37)पंचाग विचार।

(38)पंचाग प्रपंच तथा काशी की समय समय पर की अनेक शास्त्रीय व्यवस्था।

हिन्दी ग्रन्थ

(39)भाषा बोधक प्रथम ।

(40) भाषा बोधक द्वितीय भाग।

(41) हिन्दी भाषा का व्याकरण{पूर्वाद्ध} ।

(42)तुलसी सुधाकर{तुलसी सतसई पर कुण्ड़लियाँ}।

(43) महाराज ''माणाधीश''श्री रुद्रसिंह कृत् रामायण का मुद्रण ।

(44)पद्मावत{1–3}खण्ड़ ।

(45)माधव पंचक।

(46)राधा कृष्ण रामलीला।

(47) तुलसीदास जी की विनयपत्रिका संस्कृत में अनुवाद।

(48) श्री ''भारतेन्दु ''हरिश्चन्द्र की जन्मपत्री आदि हैं।

(मोतीलाल बनारसी दास ,प्रथम संस्करण 1988 वाराणसी द्वारा मुद्रित पुस्तक गोलाध्यायः व्याख्याकार केदार दत्त जोशी की पृष्ठ संख्या 87–91 से प्राप्त पुस्तक का विवरण है।)

(इसके अतिाक्ति सोचविचार पत्रिका वर्ष–3अंक.1 जुलाई,2011काशी अंक–2पृष्ठ 157–8में मधुलता दुबे जी के अनुसार सुधाकर जी के मौलिक ग्रन्थ की सूची इस प्रकार से है:–

(1)दीर्घवृत्तलक्षणम्
(2)वास्तव चन्द्रश्रृंगोन्नतिः साधनम्
(3)भूभ्रम रेखा निरुपणम्
(4)ग्रहणे छादकनिर्णयः
(5)यन्त्रराजः
(6)प्रतिमाबोध
(7)धरा भ्रमे प्राचीननवीनयोर्विचारः
(8)पिण्ड़प्रभाकरः
(9)गणक तरंगिणी
(10)द्युचरचारः
(11)समीकरण मीमांसा
(12)दिड्.मीमांसा।

सम्पादित ग्रन्थ –

(1)पंच सिद्धान्तिका
(2)सिद्धान्त तत्वविवेक
(3)शिष्यधीवृद्धितंत्रम्
(4)करणकुतूहल वासना
(5)लीलावती
(6)वृहत्संहिता
(7)ब्राह्मस्फुट सिद्धान्त
(8)ग्रहलाघव
(9)त्रिंशका
(10)करण प्रकाश
(11)बीजगणित
(12)सिद्धान्त शिरोमणि
(13)सूर्य सिद्धान्त।

हिन्दी में ग्रन्थ रचना पण्ड़ित सुधाकर द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य की प्रचुर सेवा की है । इन्होंने जायसी कृत पद्मावत महाकाव्य का सर्वप्रथम उद्धार किया । इनका दूसरा ग्रन्थ 'तुलसी सुधाकर' है जिसमें तुलसी सतसई के साथ सुधाकर जी द्वारा निर्मित कुण्ड़लियाँ लगाई गई है।

फलित ज्योतिष के विषय ऊपर द्विवेदी जी की आस्था नहीं थी और ये उसे जीवन– यापन का केवल साधन समझते थे। अपने इस सिद्धान्त का प्रकाशन इन्होंने अपनी एक हिन्दी कविता में भी किया हैजिसकी अन्तिम पंक्ति निम्नांकित है–

छायो है कराल कलिकाल जगती पै आज ।
तीसी के भाव सारे ज्योतिषी बिकायेंगे।।

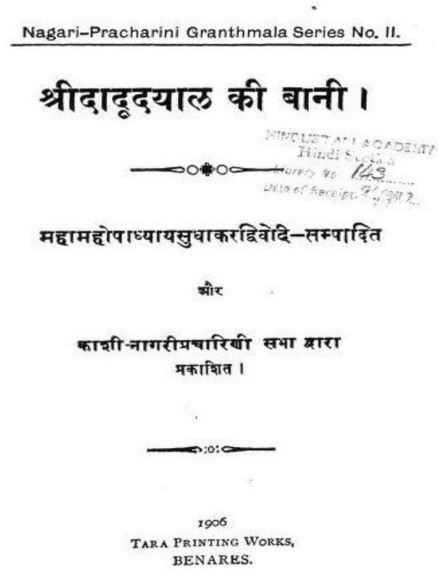
Nagari-Pracharini Granthmala Series No. II.

श्रीदादूदयाल की बानी।

महामहोपाध्यायसुधाकरद्विवेदि–सम्पादित

और

काशी-नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा
प्रकाशित।

1906
TARA PRINTING WORKS,
BENARES.

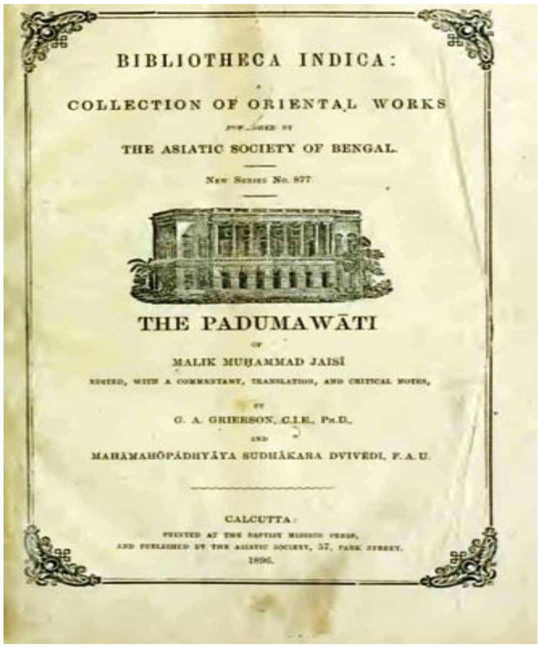
BIBLIOTHECA INDICA:
COLLECTION OF ORIENTAL WORKS
THE ASIATIC SOCIETY OF BENGAL.
New Series No. 877

THE PADUMAWĀTI
OF
MALIK MUḤAMMAD JAISĪ
EDITED, WITH A COMMENTARY, TRANSLATION, AND CRITICAL NOTES,
BY
G. A. GRIERSON, C.I.E., PH.D.
AND
MAHAMAHŌPĀDHYĀYA SUDHĀKARA DVIVEDĪ, F.A.U.

CALCUTTA:
PRINTED AT THE BAPTIST MISSION PRESS,
AND PUBLISHED BY THE ASIATIC SOCIETY, 57, PARK STREET.
1896.

संस्कृतनिष्ठ और क्लिष्ट भाषा के पक्ष में द्विवेदी जी नहीं थे। उनका विचार था कि भाषा कठिन होने से लोग आम जनजीवन से दूर हो जाते है, भाषा में लोक की भावना होनी चाहिए, इसके लिए वे लोगो के प्रति अपनी श्रध्दा प्रकट करते थे, उनका कहना था कि भाषा का प्राकृतिक वैभव लोक से मिलता है। द्विवेदी जी को शासन–प्रशासन के दबाव में भाषा का स्वरुप निर्धारण स्वीकार्य नहीं था। राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास के लिए वे सदैव प्रयत्नशील रहें। संस्कृत , हिन्दी में उनकी साहित्य संबंधी कई रचनाएं हैं । हिन्दी की जितनी सेवा उन्होंने की उतनी किसी गणित,संस्कृत और ज्योतिष के विद्वान ने नहीं की है।

उनकी आशु रचना पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने द्विवेदी जी को दो बीड़ा पान खाने के साथ ही दो स्वर्ण मुद्राओं का सम्मान दिया । 'नागरी' के माध्यम से द्विवेदी जी ने देश वासियों में हिन्दी के प्रति जो भावना जागृत की वह अविस्मरणीय है बनारस में राजघाट के पुल का निर्माण कार्य हो रहा था उन्होंने भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र से कहा–

राजघाट पर बँधत पुल ,जहँ कुलीन को ढेर।
आज गए कल देखि के ,आजहि लौटे फेर ।।

इस दोहे के 'कल'शब्द पर प्रसन्न होकर भारतेन्दु जी ने इन्हे सौ रुपये पुरस्कार दिये थे।इन्होंने सायन तथा निरयन गणनानुसार भरतेन्दु जी की जन्मपत्री बनाई थी। वह पुस्तकाकार प्रकाशित भी हुई है। इसके लिये भारतेन्दु जी ने उन्हें पांच सौ रुपये देकर सम्मानित भी किया था। (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ,श्रीयुत् ब्रजरत्नदास हिन्दंस्तानी एकेड़मी यू0पी0इलाहाबाद,1935,संस्करण पृष्ठ.78–79) ।

इसी प्रकार सुधाकर द्विवेदी जी ने भारतेंन्दु की पदवी के सन्दर्भ में अपनी 'रामकहानी' के माध्यम से भाषा के संस्कार, परिष्कार के बाद साहित्य को एक नया आयाम दिया, जो जनता के बीच समझ बढ़ाने की रही और भारी भरकम शब्दावली के दलदल से बाहर निकाल कर एक नये स्वरुप में एक नया आयाम स्थापित करने की रही। श्रीयुत्ब्रजरतन दास जी ने लिखा है कि द्विवेदी जी रामकहानी की भूमिका में लिखते हैं कि ''यह मेरे सामने की बात है कि लाहौर के जल्ला पंड़ित के वंश के पंड़ित रघुनाथ जंबू के महाराज श्री रणवीर सिंह जी की नाराज़ी से जंबू छोड़कर बनारस चले आए थे। उनसे और बाबू हरिश्चन्द्र जी से बहुत मेल था। उसी सन्दर्भ में आगे लिखा हैं कि राव श्री कृष्ण देवशरण सिंह की उपस्थिति में उन्हें भारतेन्दु पुकारा गया । उन्होंने कहा आप लोग खुशी से कहिए । (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ,श्रीयुत् ब्रजरत्नदास हिन्दंस्तानी एकेड़मी यू0पी0इलाहाबाद,1935,संस्करण पृष्ठ.113)

द्विवेदी जी ने 1902 में मलिक मुहम्मद जायसी के महाकाव्य पद्मावत की टीका जार्ज अब्राह्म ग्रियर्सन के साथ की, यह ग्रन्थ उस समय दुरुह माना जाता था , किन्तु इस टीका से उसकी सुन्दरता में वृद्धि हुई। पद्मावत की टीका''सुधाकर चद्रिका टीका''की भूमिका में द्विवेदी जी ने लिखा है :–

श्रीजानकीवल्लभो विजयते।

०००००००००००००००००००००००००

अथसुधाकर चन्द्रिका लिख्यते ।

दोहा

लखि जननी के गोद बिच मोद करत रघुराज ।
होत मनोरथ सुफल सब धनि रघुकुल सिरताज।।
....।
....।।
का दुसाधु का साधु जन का विमान संमान ।
लख**ऊ** सुधाकर–चन्द्रिका करत प्रकाश समान।।
मलिक मुहम्मद मति–लता कविता कनक वितान।

जोरि जोरि सुवरन वरन धरत सुधाकर मान।।

द्विवेदी जी का विचार था कि जब आवश्यकताओं की भाषा होती है,तो जन–मन की भी भाषा होती है और उनका मानना था कि जिस प्रकार से लोग घरों में बोलते हैं,वैसे ही हिन्दी लेखन में भी प्रयोग की जाय,उनका कहना था कि वे अंग्रेजी शब्द जो हिन्दी प्रचलन में आ गये हैं,उसे बदलकर अनावश्यक हिन्दी थोपने का काम उचित नहीं है। वे सरल भाषा के पक्षपाती थे ,और हिन्दी में तत्सम शब्दों के व्यवहार को अच्छा नहीं समझते थे। बाबू अयोध्या प्रसाद के स्मरण अंक लेख में पं0 चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी ने लिखा है कि ''काशी नागरी प्रचारिणी सभा का गृह प्रवेशोत्सव मंगलपूर्वक हो चुका था,महामहोपाध्याय पण्ड़ित सुधाकर द्विवेदी ने –धनि भाग आज या भवन में नाथ तिहारे पग पड़ै........''कहकर सर डिग्गस लाटूश का स्वागत किया और माननीय मदन मोहन मालवीय जी ने अंग्रेजी में स्पीच –गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ......कहा था । (पुस्तक वार्ता –अंक 34 मई–जून –2011महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय,वर्धा)नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग–1,संवत्–1977 अंक में गोस्वामी तुलसीदास की विनयावली निबन्ध में बाबू श्यामसुन्दर दास ने उल्लेख किया है कि गोस्वामी तुलसी दास कृत विनयावली की प्रति महामहोपाध्याय पं0सुधाकर द्विवेदी को देखने को दी और उन्होंने विचार कर संशोधन भी कर दिया था। इस प्रकार सुधाकर जी की हिन्दी सेवा चलती रही।

सुधाकर जी हिन्दी को लोकजीवन के रंग में रंगना चाहते थे। उन्होनें बाबू श्यामसुन्दर दास जी के साथ नागरी प्रचारिणी में हिन्दी प्रचार प्रसार के लिए बहुत समय बिताया और पाया कि साहित्य जब लोक जीवन के रंगों में रंगी जाती है। उस समय उन्हें अपनी इकाई की गरुता का ध्यान नहीं रहता था , केवल उत्तरादायित्व एवं सोचे हुए कार्य को पूरा करने का भान ही रहता था। उनका यह कथन स्वयं उनकी भाषा की विविधता पर भी लागू होता है। द्विवेदी जी ने अपने जीवन का अनुभव अपनी कलम की ताकत अपने सामाजिक सामंजस्य के भाव को कलम की आवाज बनाकर उड़ेला है। सुधाकर जी जिस काल खण्ड में विद्वान थे , उस समय सच कहने का परिणाम था अपने घर को नष्ट करना । उस समय अंग्रेजी शासन था,भाषा व्यवसाय नहीं तपस्या थी। साहित्यकारों को न तो राजाश्रय प्राप्त था और न ही पूँजीपतियों का सहयोग, जो सम्पादक होता था उसी का पूरा दायित्व था । अंग्रेजो के नियम कानून के रूप में साहित्यकार ही सरकार का विरोध और यंत्रणा झेलते थे,उसी में तालमेल बनाकर भाषा को आगे की दिशा में ले जाने का प्रयास नागरी प्रचारिणी सभा और उसके संस्थापको ,विद्वानों को है।

द्विवेदी जी राम भक्त थे उनकी काव्य रचनाएं प्रायः राम स्तुति से ही आरम्भ होती थी –जैसे श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

भारतीय ज्योतिष और गणित के मूर्धन्य विद्वान होते हुए भी हिन्दी और नागरी के लिए उनके योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

संवत् 1853 में नागरी प्रचारिणी पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ, आरम्भ के पांच वर्ष के सम्पादन का कार्य बाबू श्यामसुन्दर दास जी ने संभाला,उसके बाद सन् 1900(संवत्1957) में नागरी प्रचारिणी ग्रन्थमाला नाम की पुस्तक प्रकाशित करने की योजना बनी और वर्ष में चार अंक निकालने का निश्चय हुआ , नागरी प्रचारिणी सभा की पत्रिका के 12 वें अंक की पृष्ठ संख्या 32 पर विवरण है कि मंगलवार दिन 16 जुलाई 1907 को संध्या 05:30 बजे स्थान सभा भवन ,चौदहवां वार्षिक विवरण पढ़ा गया सर्वसम्मति महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी जी सभापति बाबू गोविन्ददास और बाबू श्यामसुन्दर दास उपसभापति,बाबू जुगल किशोर मंत्री बनाये गये। उस समय प्रबन्धकारिणी सभा के सभासद संयुक्त प्रदेश ऑनरेबल पं0 महामना मदन मोहन मालवीय जी एवं पं0 श्याम बिहारी मिश्र जी बनाये गये।

संवत् 1962 से 1965 तक महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी जी सम्पादक हुए,बारहवें वर्ष से यह पत्रिका त्रैमासिक हो गयी। 16 वर्षों में कुल 64 अंक प्रकाशित हुए, नागरी प्रचारिणी ने ही 'हिन्दी वैज्ञानिक शब्दावली'के सम्पादन का कार्य बाबू श्यामसुन्दर दास जी को सौंपा,जिसके निरीक्षक श्री ठाकुरप्रसाद जी,और उनकी टीम श्री विनायक राव,श्रीखुशीराम,श्री एन0वी0रानाड़े,श्री भगवती सहाय,श्री सुधाकर द्विवेदी,और श्री भगवान दास जी चुने गये । संवत् 1962 में यह कोश तैयार हुआ , इसकी इतनी मांग हुई कि शीघ्र ही सभी प्रतियां समाप्त भी हो गयी ।

दार्शनिक भगवान दास जी ने लिखा है कि सुधाकर जी –सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज में काम करते हुए साइन्टिफिक ग्लॉसरी के अध्यात्म विद्या ''साइकोलॉजी''के अंग्रेजी हिन्दी के पर्याय के लिए प्रत्युत्पन्नमति थे।

उन्होने दादू दयाल की बानी का सम्पादन भी किया जिसका प्रकाशन राधाकृष्णदास और नागरी प्रचारिणी के सहयोग से दो भागों में किया गया इन बातों को पुस्तक की भूमिका में द्विवेदी जी ने कहा है । द्विवेदी जी पर अपने समकालीन साथियों और साहित्यकारों से स्नेह संबन्ध हावी रखते हुए अपने का कर्तव्य बोध समझकर महामना मदन माहन मालवीय जी के साथ तत्कालीन संयुक्त प्रांत के अस्थायी राज्यपाल सर जेम्स लाटूश से एक जुलाई 1898 को पांच लोग न्यायालयों में हिन्दी और नागरी लिपि को सम्मान का स्थान दिलाने के लिए मिले। कहा जाता है कि एक

उर्दू लिपिक के साथ प्रतियोगिता में सुधाकर जी ने निर्धारित समय से दो मिनट पहले ही सुन्दर और स्पष्ट नागरी लिखकर हिन्दी और नागरी को न्यायालयों में स्थान दिलाया ।

द्विवेदी जी कहते थे कि हिन्दी को ऐसा रुप दिया जाय कि वह स्वतः व्यापक रुप में जनसाधारण के प्रयोग की भाषा बने, ऐसा नहीं हो कि लोग यह समझे कि यह थोपी जा रही है और सहित्य के लिए जो नागरी प्रचारिणी की योजनायें स्थापित की, उसकी बराबरी करने वाला शायद ही कोई अन्य हो । उनके द्वारा प्रकाशित सम्पादित कार्य स्मरणीय रहेंगे। हिन्दी भाषा को उन्होंने नवीन स्वरुप प्रदान किया । उनका चरित्र और उनकी कलम दोनो ही प्रकाश स्तंभ की भांति नयी पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त करने के लिये एक आधार है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि सुधाकर जी की अधिकतम पुस्तकों का प्रकाशन उनके पुत्र श्री पद्माकर द्विवेदी प्रोफेसर मैथेमेटिक्स और इन्डियन ऐस्ट्रानामी गर्वमेंट कालेज बनारस, ने करवाया । एक मई 1910 ई0 को नागरी प्रचारिणी सभा ने यह निश्चय किया कि काशी में हिंदी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया जाय,साथ ही यह निश्चय भी किया कि सम्मेलन में किन विषयों पर विचार हो और कौन सभापति चुना जाय। इस कार्य के लिये 11 व्यक्तियों की प्रबंध समिति बनाई गई । पं0 मदनमोहन मालवीय ,पं0महावीर प्रसाद द्विवेदी और श्री गोविन्द नारायण मिश्र के नाम सभापति के लिये आए और नागरीप्रचारिणी सभा की प्रबंध समिति ने मालवीय जी को ही हिंदी साहित्य सम्मेलन का प्रथम सभापति स्वीकार किया। सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन 10,11,और 12 अक्टूबर को नागरी प्रचारिणी सभा में हुआ। सम्मेलन का आयोजन व्यापक मतभेद के अंतर्गत हुआ था। पं0 मदन मोहन मालवीयजी के नाम प्रस्तावित करते समय महामहोपाध्याय पं0 सुधाकर द्विवेदी ने मालवीय जी के संबंध में जो कुछ कहा था वह पूर्णतः सत्य था कि इस सम्मेलन का सभापतित्व किसी ऐसे पुरुष को देना चाहिए जिसमें चंचलता न हो,गंभीरता हो और जो बड़े–बड़े कामों पर विचार करे, अन्ततः सब सफल रहा ।(मालवीय मिशन डाट ओआरजी के श्री सुधाकर पाण्ड़ेय के साभार)

भारतीय ज्योतिष,गणित को हिन्दी में सहज रुप से देने का कार्य सुधाकर जी ने उसी प्रकार से किया , जिस प्रकार से संस्कृत के लिए किया। छुआछूत,जाति भेद के विरोधि सुधाकर जी का निधन एक साधारण बीमारी से 28 नवम्बर 1910 ई0 अगहन या मार्गशीर्ष (सोमवार सम्वत् 1967)महीने की कृष्ण द्वादशी को हुआ । वे ऐसे यशस्वी विद्वान थे , जो संकीर्णता की भावना से उठकर समाज विकास का चिंतन करते थे, विद्वान के विदेश यात्रा से धर्म की हानि को निरर्थक बात मानते थे,ऐसे विद्वत् मनीषी का स्मरण ही स्वाभिमान और सेवा का संकल्प देता है।

–––––0–––––

लेखक–डॉ0करुणा शंकर दुबे

एमआईजी 1/148 रुचिखण्ड़–दो,
शारदानगर ,रायबरेलीरोड़ लखनऊ–226002

समीकरण-मीमांसा

लेखक

स्वर्गवासी पं० सुधाकर द्विवेदी,

सम्पादक

पद्माकर द्विवेदी

प्रकाशक

विज्ञान परिषद्, प्रयाग

'Master Manimala Series No. 145 (Jyautish Sec. 33)

THE

CHALANA KALANA

[Chapters I—XX]

BHARATIYA VIDYA BHAVAN
S N ....
LIBRARY

BY

MAHAMAHOPADHYAYA

PANDIT SUDHAKARA DVIVEDI.

EDITED BY HIS SON

PADMAKARA DVIVEDI JYAUTISHACHARYA

Late First Professor of Mathematics and Astronomy
Government Sanskrit College, Benares.

PUBLISHED BY

MASTER KHELARILAL & SONS.,

SANSKRIT BOOKDEPOT.

KACHAURI GALI, BENARES CITY.

1941

Price Rs. 2'8'-

म० म० सुधाकरद्विवेदिविरचितं

चलराशिकलनम्

चतुरध्यायात्मकः प्रथमो भागः

THE

CHALARAŚIKALANA

BY

M. M SUDHĀKARA DVIVEDI

(PART I)

EDITED

BY

Pt. BALDEVA MISHRA

Jyautishacharya Jyautish Tirth

SARASVATĪ BHAVANA

BENARES.

1941.

THE

PRINCESS OF WALES

SARASVATĪ BHAVANA

No. 89

(PART I)

EDITED

BY

Dr. MANGAL DEVA SHASTRI,

M. A., D. PHIL. (OXON.),

PRINCIPAL,

GOVT. SANSKRIT COLLEGE, BENARES

THE

CHALARĀŚIKALANA

(PART I)

Printed by

M. V. Paradkar

Jnanamandal Yantralaya, Benares City

1941.

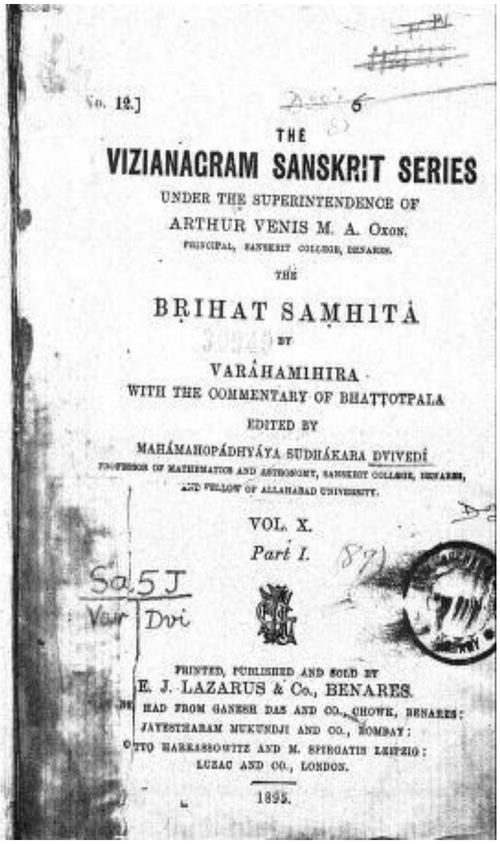
No. 12.]

THE

VIZIANAGRAM SANSKRIT SERIES

UNDER THE SUPERINTENDENCE OF

ARTHUR VENIS M. A. OXON.

PRINCIPAL, SANSKRIT COLLEGE, BENARES.

THE

BṚIHAT SAMHITĀ

BY

VARĀHAMIHIRA

WITH THE COMMENTARY OF BHATTOTPALA

EDITED BY

MAHĀMAHOPĀDHYĀYA SUDHĀKARA DVIVEDĪ

PROFESSOR OF MATHEMATICS AND ASTRONOMY, SANSKRIT COLLEGE, BENARES,

AND FELLOW OF ALLAHABAD UNIVERSITY.

VOL. X.

Part I.

Sa 5 J

Var Dvi

PRINTED, PUBLISHED AND SOLD BY

E. J. LAZARUS & Co., BENARES.

HAD FROM GANESH DAS AND CO., CHOWK, BENARES;

JAYESTHARAM MUKUNDJI AND CO., BOMBAY;

OTTO HARRASSOWITZ AND M. SPIRGATIS LEIPZIG;

LUZAC AND CO., LONDON.

1895.

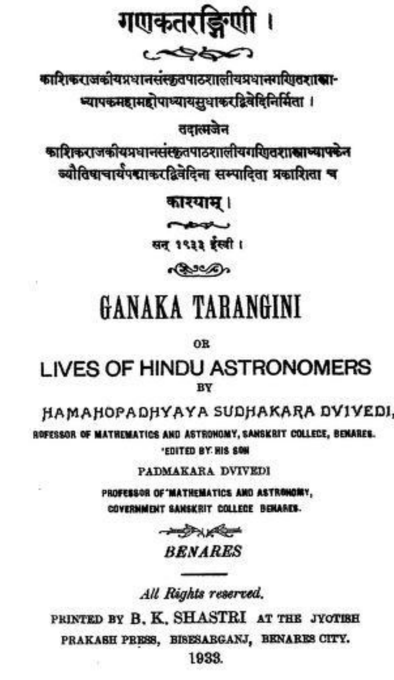
गणकतरङ्गिणी ।

काशिकराजकीयप्रधानसंस्कृतपाठशालीयप्रधानगणितशास्त्रा-
ध्यापकमहामहोपाध्यायसुधाकरद्विवेदिनिर्मिता ।

तदात्मजेन

काशिकराजकीयप्रधानसंस्कृतपाठशालीयगणितशास्त्राध्यापकेन
ज्यौतिषाचार्यपद्माकरद्विवेदिना सम्पादिता प्रकाशिता च

काश्याम् ।

सन् १९३३ ईस्वी ।

GANAKA TARANGINI

OR

LIVES OF HINDU ASTRONOMERS

BY

MAHAMAHOPADHYAYA SUDHAKARA DVIVEDI,

PROFESSOR OF MATHEMATICS AND ASTRONOMY, SANSKRIT COLLEGE, BENARES.

EDITED BY HIS SON

PADMAKARA DVIVEDI

PROFESSOR OF MATHEMATICS AND ASTRONOMY,

GOVERNMENT SANSKRIT COLLEGE BENARES.

BENARES

All Rights reserved.

PRINTED BY B. K. SHASTRI AT THE JYOTISH

PRAKASH PRESS, BISESARGANJ, BENARES CITY.

1933.

S. N ......
BH O LIBRARY.

याजुष-ज्यौतिषं
सोमाकरसुधाकरभाष्यसहितम् ।
आर्च-ज्यौतिषं
च
सुधाकरभाष्येण तल्लघुविवरणेन च सहितम् ।
महामहोपाध्यायसुधाकरद्विवेदिसंशोधितम् ।
वाराणस्यां
मेडिकल्‌हाल्‌नाम्नि मुद्रायन्त्रालये मुद्रितम् ।
संवत् १९६४ । सन् १९०८ ।

Sa 5G
SKD

YĀJUSHA-JYAUTISHA
with the Bhāshyas of Somākara Śesha & Sudhākara Dvivedin,
AND
ĀRCHA-JYAUTISHA
with the Bhāshya of Sudhākara Dvivedin and Professor Muralidhar Jhā's explanatory notes
EDITED BY
MAHĀMAHOPĀDHYĀYA SUDHĀKARA DVIVEDIN,
Fellow of Allahabad University
AND
First Professor, Government Sanskrit College, Benares.
PRINTED AT THE MEDICAL HALL PRESS, BENARES.
1908.

BIBLIOTHECA INDICA:
A
COLLECTION OF ORIENTAL WORKS
PUBLISHED BY
ASIATIC SOCIETY OF BENGAL
NEW SERIES, No. 1287 & 1296
सूर्यसिद्धान्त ।
THE SURYYA SIDDHANTA

EDITED
TOGETHER WITH A COMMENTARY CALLED SUDHAVARSINI
BY
MAHAMAHOPADHYAYA SUDHAKARA DVIVEDI.
PRINTED BY J. N. BOSE, AT THE WILKINS PRESS, COLLEGE SQUARE,
AND PUBLISHED BY THE
ASIATIC SOCIETY, 1, PARK STREET
Calcutta:
1911